कार्यालय जिला पंचायत (ग्रामीण विकास) छिंदवाड़ा (म.प्र.)

सफलता की कहानी

आदिवासी महिला को योजना ने बनाया आत्मनिर्भर
साल भर खेत में छाई रहती है हरियाली

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी स्कीम की कपिलधारा उपयोजना ने एक आदिवासी महिला को पूरी तरह आत्मनिर्भर बना दिया। योजना में बने कूप से सिंचाई की पर्याप्त सुविधा हो गई, जिससे साल भर खेत में हरियाली छाई रहती है। दूसरों के यहां मजदूरी पर जाने वाले घर के अन्य सदस्यों को भी घर में ही काम मिल गया। हर्रई विकासखंड की ग्राम पंचायत साठिया निवासी कृष्णाबाई फूलबी आदिवासी के लिए कपिलधारा उपयोजना लाभकारी सिद्ध हुई है।

सरपंच नन्हेलाल उईके ने बताया कि वर्ष 2007–08 में कृष्णाबाई के खेत में एक लाख तीन हजार की लागत से कूप निर्माण कराया गया। करीब 30 फीट गहरे कुंए में गर्मी के दिनों में काफी पानी भरा हुआ था। कूप निर्माण में गांव के करीब 7–8 मजदूरों को मजदूरी मिली।

कूप निर्माण से करीब डेढ़ हेक्टेयर भूमि की मालकिन कृष्णाबाई सिंचाई के लिए पूरी तरह आत्मनिर्भर बन गई है। आर्थिक दृष्टि से भी कृष्णाबाई पूरी तरह सक्षम हो गई है।

कृष्णाबाई ने बताया कि खेत में पानी की सुविधा नहीं होने के कारण डेढ़ हेक्टेयर भूमि अक्सर वीरान पड़ी रहती थी। सिर्फ बारिश की फसल ही ले पाते थे। शेष सीजन में दूसरों के घर मजदूरी करके गुजारा करते थे। परिवार की आर्थिक स्थिति काफी खराब थी। रोजगार गारंटी योजना में वर्ष 2007–08 में कूप निर्माण कराया गया। गर्मी में खुदाई के बावजूद कुएं में भरपूर पानी लग गया। उसी समय खेत में टमाटर, आलू, मिर्च, भटे आदि हरी सब्जियाँ लगा दी। इधर कुंए की बंधाई का कार्य चलता रहा और उधर सब्जी का उत्पादन भी होते रहा। सब्जी का इतना उत्पादन हुआ कि अपने उपयोग के बाद बची हुई सब्जी बाजार में बेच सकें। हर्रई और बटका के बाजार में करीब 20 हजार

रूपए की सब्जी उसी सीजन में बेच दी। पहले केवल बरसाती फसल के भरोसे रहते थे। अब रबी की फसल भी पर्याप्त मात्रा में होने लगी है। अनाज और रूपए के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। बहू–बेटा पहले दूसरों के खेतों में काम पर जाते थे, अब अपने ही खेत में काम करते है।

कृष्णाबाई के पुत्र विश्राम ने बताया कि अब अपने ही खेत में काम करके आनंद की अनुभूति होती है। हर सप्ताह बाजार में सब्जी बेचकर अच्छी–खासी आमदनी होने लगी है। सालभर खेत में हरियाली रहती है। पहले इतनी अच्छी स्थिति नहीं थी कि खेत में कुआं खोद पाए, लेकिन शासन ने हमारे खेत में कुआं खुदवाकर हमारे परिवार को आत्मनिर्भर बना दिया। एकमात्र कुआं खुदने से पूरा परिवार अब अच्छा जीवन जी रहे है।